Prakriti- The International Multidisciplinary Research JournalYear 2025, Volume-2, Issue-2 (Jul-Dec)

जैनाचार की वैज्ञानिकता : पर्यावरण सुरक्षा एवं संतुलन के संदर्भ में

हीरांशी जैन[1], डॉ.सुनीता सियाल[2]
[1]बी.टेक बायोटेक्नोलॉजी,एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी,चेन्नई
hj2349@srmist.edu.in
[2]एसोसिएट प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्षा,सोफिया गर्ल्स कॉलेज (स्वायत्तशासी), अजमेर
sunitaheeranshi1@gmail.com

शोध सारांश -
जैन दर्शन के सिद्धांत, प्रकृति की सुरक्षा की कोरी चर्चा स्वरूप ना होते हुए प्रकृति सुरक्षा का क्रियान्वयन हम अपने जीवन में कैसे कर सकते हैं, उसका खूबसूरत मार्गदर्शन भी करते हैं | पर्यावरण सुरक्षा से स्वच्छ जीवन सुरक्षित होता है और पर्यावरण विनाश से स्वयं का विनाश होना जब निश्चित है तब पर्यावरण सुरक्षा आज का सर्वोपरि मुद्दा होना चाहिए, जो हाशिये पर जा चुका है | पर्यावरण मुख्य रूप से पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु,वनस्पति एवं आकाश से निर्मित होता है | वे यदि दूषित हो जाते हैं तो पर्यावरण भी दूषित हो जाता है और वे यदि सुरक्षित रहे पाते हैं तो पर्यावरण भी सुरक्षित रह पाता है | वैदिक दर्शन में भी जल व अग्नि इत्यादि तत्वों को दिव्य तत्वों के रूप में संबोधित किया गया है जैसे कि, 'आपो देवता | अग्नि देवता |' वही जैन दर्शन में उन तत्वों में जीवों का अस्तित्व मानकर उन्हें सम्मान देने की बात जगह-जगह पर की गई है | सभी जीव एक दूसरे के पूरक है, एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, एक दूसरे को सुख देकर ही सुखी बन सकते हैं तथा एक दूसरे के जीवन को सुरक्षित करके ही अपना जीवन सुरक्षित कर सकते हैं- ऐसा संदेश प्रभु महावीर ने अपने आगमों में जगह-जगह पर दिया है | 'परस्परोपग्रहो जीवानाम' यह सूत्र इसी का द्योतक है | आप अन्य को दुखी करके स्वयं को कभी भी सुखी नहीं कर सकते, यह जैन दर्शन का शाश्वत सिद्धांत है |

संकेत बिंदु : जैन आचार, वैज्ञानिकता, पर्यावरण सुरक्षा, पांच प्राकृतिक घटक, अहिंसक वृत्ति, प्रदुषण के दुष्परिणाम, श्रावकाचार पालन

सामान्य रूप से पर्यावरण का अर्थ है जीवन और जीव समूह को समेटे रखना, भौतिक वस्तुओं व परिस्थितियों का निर्धारण करना | पर्यावरण वह आवरण है जिसमें सभी ओर से सुरक्षा प्रदान की जाती है | पर्यावरण शब्द आधुनिक युग का प्रयोग है | प्राचीन समय में यह शब्द प्रचलित नहीं था, परंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अहिंसा,सत्य, अस्तेय,ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, जीवदया, संयम, त्याग, तप,दान आदि की भावना पर्यावरण ही है । हमारे आगमों में सदैव विशुद्ध बने रहने की बात कही है। विशुद्धता ही पर्यावरण है। पर्यावरण शब्द परि+ आवरण, इन दो शब्दों के योग से बना है ।'परि' का अर्थ चारों ओर, सभी और, इधर-उधर,पूर्ण, अत्यंत आदि है | आवरण का अर्थ घेरा, बाधा,दीवार, पर्दा, छिपाना आदि है ।'1 अतः सरल रूप में यही कह सकते हैं कि जो चारों ओर से रक्षा करता है वहीं पर्यावरण है ।जैन आगम ग्रंथों में आवरण का अर्थ है आच्छादन करने वाला, ढकने वाला,तिरोहित करने वाला। यहां आवरण शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है, जो आवृत्त करता है या जिसके द्वारा आवर्त किया जाता है उसे आवरण कहते हैं।'2 इसी तरह परि का अर्थ सर्वतोभाव,समीपता आदि है । प्रायः सभी दार्शनिकों ने वनस्पति को चेतन माना है | जैन चिंतकों ने वनस्पति से पूर्व पृथ्वी,जल आदि को भी चेतन, सजीव, प्राणवान आदि कहा है |प्रज्ञापनाकार ने प्रत्येक जीव की वस्तु स्थिति को प्रस्तुत करते हुए यह व्यक्त किया है कि जो जीते हैं, प्राणों को धारण करते हैं, वे जीव है ।'3 पर्यावरण प्रदूषण आज की ज्वलंत समस्या है | भौतिकता के प्रभाव से जीवन और पदार्थ के बीच का संतुलन गड़बड़ा गया है | पर्यावरण संतुलन बिगड़ने का मूल कारण देखने पर ज्ञात होता है कि इसके मूल में मानव की भोग वृति है |जब मनुष्य प्राकृतिक जीवन शैली छोड़कर कृत्रिम शैली अपनाता हैं तो संतुलन डगमगाने लगता है और प्रदूषण उत्पन्न होता है | आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण सबसे बड़ी चुनौती है | इससे सम्बंधित सभी तरह का चिंतन एवं इसे बचाने पर पर्याप्त प्रयत्न भी किया जा रहा है | इसके बचाने के लिए विज्ञान जगत के विचारको से लेकर सभी तरह के विचारक प्रयत्नशील है | सभी का एक ही लक्ष्य है कि प्रकृति के मौलिक स्वरूप को सुरक्षित

रखा जाए | प्रकृति पर विजय प्राप्त करने वाले विचारशील व्यक्तियों को यह बोध कराया जा रहा है कि पर्यावरण का प्रकृति के समस्त प्राणियों के साथ अटूट बंधन है |

जैन आगम साहित्य में जिन तथ्यों का विश्लेषण किया गया है, उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक जगत में समीचीन माना जा रहा है । जैन आगमों में ज्ञान ही ज्ञान नहीं विज्ञान भी है | युवा पीढ़ी के लिए दिशा निर्देश तथा पर्यावरण के विनाशक व्यक्तियों के लिए वैज्ञानिक तथा समाधान युक्त विचार भी है | उनके मूल में ऐसा विज्ञान है जो सदैव नवीन ही बना रहेगा,जिसे जीवन पद्धति का सबसे सुंदर सूत्र कहा जा सकता है | पर्यावरण संस्कृति का समग्र रूप है जिसमें प्राणी मात्र का निवास,आवास,स्थान एवं अवकाश विद्यमान है | इससे न केवल पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति का स्थान सुरक्षित है अपितु जितने भी जगत में प्राणवान जीव है उनका जीवन सहज गुण आदि सुरक्षित है।

पर्यावरण के पांच प्राकृतिक घटकों में से प्रथम घटक पृथ्वी आज भयानक आयुधीय विस्फोटों तथा उनके जहरीले घोलो की कटु-तिक्त गन्दी और भू-खनिजों के उत्खनन से क्षतिग्रस्त होने के कारण वात्सल्यगुण-विहीन होने के लिए विवश है | जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्या के समाधान तथा अपनी समृद्धि के बढ़ाने हेतु 18 वीं सदी में यूरोप में औद्योगिक क्रांति हुई | कल कारखानों का संचालन हुआ, उनके धुंए से वायुमंडल में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा में 25 प्रतिशत मीथेन गैस की मात्रा में शत प्रतिशत और नाइट्रोजन-ऑक्साइड की मात्रा में 18% की वृद्धि हो गई | इन कारणों से पृथ्वी मंडल के तापमान में काफी असंतुलन हो गया | यही स्थिति अंटार्कटिका में भी हुई | उक्त औद्योगिक क्रांति के फलस्वरुप वायुमंडल में सर्वत्र विषैली गैसों का अनुपात बढ़ गया | इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि पृथ्वी का सुरक्षा कवच माने जाने वाले ओजोन परत में छिद्र होने लगे | यह ओजोन परत पलंग पर मच्छरदानी के समान लगभग 15 किलोमीटर ऊपर से लेकर लगभग 55 किलोमीटर ऊपर तक सारे पृथ्वीमंडल पर आच्छादित है, जो प्राणी जगत को स्वस्थ बनाए रखने हेतु सूर्य की पराबैंगनी किरणों को रोक कर रखती है | वैज्ञानिकों का कथन है कि तापमान के असंतुलित होने के कारण ओजोन परत में छिद्र हो रहे हैं | इस कारण प्राणी जगत में अनेक रोगों का प्रवेश हो रहा है | विविध चर्म रोग, हृदय रोग,रक्तचाप,कैंसर तथा अंधापन जैसे रोगों की वृद्धि

इसी कारण हो रही है | इन रोगों की वृद्धि में घरों में लगे हुए एयर कंडीशनर,फ्रिज, अग्निशामक यंत्र, कीटनाशक दवाई तथा आधुनिक सुविधाओं के अन्य उपकरण भी कारण बन रहे हैं |

दूसरा घटक जल है, जो कल कारखानों के विषाक्त गैस मिश्रित सड़े हुए कीचड़ से दुर्गंध और प्रदूषित हो रहा है | तीसरे एवं चौथे घटक अग्नि एवं वायु, अपने-अपने कृत्रिम एवं कृत्रिम रूपों में सीमातीत दुरुउपयोगों तथा भूगर्भीय कोयला,लोहा,यूरेनियम,बॉक्साइट जैसे आग्नेय तत्वों के आशातीत उत्खननों के कारण सृष्टि के तापमान को असंतुलित तथा प्रदूषित कर रहे हैं | 'आधुनिक वैज्ञानिकों की खोजों के अनुसार, एक वर्ग जीवित भूमि में लगभग 50 लाख कीटाणु रहते हैं, जो पृथ्वी की उर्वरा शक्ति तथा उसके खनिजों की वृद्धि में सहायक होते हैं |'4 अतः यह पृथ्वी प्राणीधारियों के लिए मातृ-स्वरूपा है | वह सभी के पोषण के लिए धन-धान्य, स्वास्थ्य प्रदान करने वाले फल,वृक्ष,लताएँ, पौधे,जड़ी-बूटियां,सब्जियां आदि उत्पन्न करती है | मेघ जल को अंतरंग में संचित कर वह पृथ्वी अवशिष्ट जल को नदी,नद,सरोवर एवं नहरों में प्रवाहित कर सभी की आवश्यकताओं को पूर्ण करती है | पर्यावरण के द्वितीय घटक जल कायिक जीवों के जीवनदायी उपकारों के कारण ही अन्य सभी जीव सुरक्षित है, क्योंकि जल के बिना न तो कोई जीवित रह सकता है और न ही वह विकसित या सुरक्षित रह सकता है | 'आधुनिक वैज्ञानिकों की गवेषणाओं के अनुसार पानी की एक बूंद में 36450 सूक्ष्म कीटाणु देखे गए हैं, जो अपनी अपनी क्षमता शक्ति के अनुसार एक दूसरे की सहायता अथवा उपकार करते रहते हैं |'5 जहां एक बाल्टी पानी से कार्य चल सकता है,वहां दो-तीन बाल्टी पानी का अनावश्यक रूप से अपव्यय करना |जैनाचार्यों ने इसमें हिंसा का दोष माना है | यह इसलिए कि उस फेंके गए पानी से उत्पन्न कीचड़,गंदगी,दुर्गंध तथा उससे विषैले कीटाणुओं की उत्पत्ति तथा उससे रोगों का प्रसार होता है |पर्यावरणविदों के अनुसार यही पर्यावरण प्रदूषण है, जो समाज के लिए भी घातक है | इससे बचने बचाने का उपाय,अपने आचरण में अहिंसक वृत्ति से ही हो सकती है |

सामान्यतया भोजन पकाने,अंधकार में प्रकाश करने तथा ठंड कम करने के लिए अग्नि जलाई जाती है |यद्यपि यह विराधक अथवा हिंसक मार्ग माना गया है,फिर भी श्रावक के लिए आवश्यक होने के कारण यह क्षम्य है | किंतु व्यर्थ में ही उसे

आवश्यकता से अधिक जलाए रखना,यह उसका दुरुपयोग है,जो भी घातक माना गया है | जैन आचार्यों ने तथा वर्तमान के विचारशील गवेषक वैज्ञानिकों ने स्पष्ट कहा है कि वर्तमान एवं भविष्य के पर्यावरण संतुलन एवं सुरक्षा की दृष्टि से वायुकायिक जीवों अथवा वायु के साथ अनावश्यक रूप से छेड़छाड़ तथा उसका दुरुपयोग कर उसे प्रदूषित नहीं करना चाहिए | यह तभी संभव होगा जब व्यक्ति अपने जीवनचर्या में परिवर्तन करें और यह संभव होगा श्रावकाचार पालन से। महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु के सिद्धांत पेड़ पौधों एवं वनस्पति में भी जीवन है | कई शताब्दियों पूर्व भगवान महावीर स्वामी ने इस सिद्धांत को मान्यता दी थी एवं पेड़ पौधों एवं वनस्पति के काटने को वर्जित किया था |

गृहस्थ होने के कारण पूर्णतया ऐसा कर पाना संभव नहीं है परंतु मनुष्य ने अपने सुख के लिए आवश्यकता से अधिक और व्यर्थ ही पेड़ पौधों को काटकर प्रदूषण की समस्या पैदा कर ली है | वन की कमी के कारण ही वन्य जीव एवं पशुओं की दुर्लभ प्रजातियां नष्ट होती जा रही है | वन्य जीव एवं पशुओं की कमी हमारे लिए घातक सिद्ध होगी | वन मनुष्य को सुख में जीवन की सामग्री प्रदत्त करते हैं परंतु स्वार्थी मनुष्य ने सोने का अंडा देने वाली मुर्गी की भांति उसे ही समाप्त कर विनाश की ओर अपने कदम बढ़ा लिए हैं |

आचार्य जिनसेन ने मानव के लौकिक और आध्यात्मिक विकास में वनों,वृक्षों एवं वनस्पतियों के योगदान के विषय में कितना सुंदर लिखा है-

1 वन-अरण्य संत-साधकों के लिए कितने स्वास्थ्यप्रद एवं कल्याणकारक होते हैं

2 वे संत एवं साधक तपस्वी जनों को शांति का संदेश देते हैं |

3 यदि घने जंगल नहीं रहेंगे,तो मेघों को कौन आकर्षित करेगा ? और वर्षा के बिना पर्यावरण के संरक्षक नदी,नद,पहाड़,जंगल,वनस्पति आदि सब सूख जाएंगे

4 वनस्पति अपने आप ही अपने लिए भोजन-पान आदि जुटा लेती है,किसी से कुछ मांगती नहीं,फिर भी वह आपके लिए स्वास्थ्यप्रद फल-फूल, मेवे आदि के रूप में असीमित वरदानों की वर्षा करती रहती है |

5 फिर आप उनका छेदन,भेदन एवं कर्त्तन कर उन्हें सताते क्यों रहते हैं ? आजकल फूलों को तोड़कर महिलाएं अपनी वेणी में गूँथकर बड़े ठाठ से श्रृंगार करती है और सूट-बूट-धारी आधुनिक जेंटलमैन अपने कोट के कॉलर पर गुलाब का फूल लगाकर

प्रमुदित होते हैं | इस हिंसक-श्रृंगार को देखकर मुझे जगत विख्यात दार्शनिक-चिंतक-लेखक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ से संबंधित एक घटना का स्मरण आ रहा है | एक बार उनकी परम भक्त एक महिला ने उनसे पूछा कि- "क्या आप फूलों के सौंदर्य-प्रेमी है ?" शॉ ने सकारात्मक उत्तर देते हुए कहा कि "मैं फूलों के सौंदर्य का प्रेमी अवश्य हूं, किंतु फूलों को तोड़ना एवं अपने प्रिय बच्चों की गर्दन मरोड़ कर उसे मार डालना दोनों को बराबर मानता हूं |" यह उत्तर सुनकर वह महिला चुप हो गई | उक्त उदाहरण तो मात्र इसीलिए प्रस्तुत किया गया हैं कि वानस्पतिक जातियां-प्रजातियों का महत्व जाना जा सके तथा प्राणी-जगत के प्रति उनकी बहुआयामी सेवाओं का स्मरण किया जा सके। इस वैज्ञानिक युग में भगवती सूत्र में वर्णित बातें सत्य हो रही है | पांचवें काल खंड की अवधि 21 हजार वर्ष है | 21000 वर्ष बाद आने वाली स्थिति, 21वीं शताब्दी में ही ना आ जाए ? क्योंकि वैज्ञानिक घोषणा है - 21वीं शताब्दी का मध्य दुनिया के लिए भयंकर कष्टदायी होगा | संभव है काल की उदीरणा हो जाए | काल कर्म की उदीरणा में निमित्त बनता है तो हो सकता है,कर्म भी कभी काल की उदीरणा में निमित्त बन जाए। अभी हाल में वैज्ञानिकों ने प्रदूषण संबंधी अपने सर्वेक्षण के निष्कर्षों से चिंतित होकर सभी राष्ट्रों को आगाह किया है और कहा है कि यदि- " पर्यावरण-प्रदूषण इसी प्रकार तीव्र गति से बढ़ता रहा,तो सारी सृष्टि सत्व-विहीन होकर रुग्ण हो जाएगी और इसका आयुष्य 100 वर्षों से अधिक नहीं चल सकेगा |" उन्होंने स्पष्ट कहा है कि अर्थ लोभी स्वार्थान्ध मानव के विवेक-विहीन दुष्कर्मों के कारण ही उक्त विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है | नैतिक दृष्टि से विचार किया जाए, तो प्रदूषण की यह समस्या तब तक कायम रहेगी जब तक मानव अपने विचारधारा तथा जीवन पद्धति में परिवर्तन नहीं कर लेता |

यह सुनिश्चित है कि पर्यावरण प्रदूषण जैसी विषम समस्या का समाधान वातानुकूलित बंद कमरों में बैठकर कायदे-कानून बनाते रहने से नहीं हो सकता | कठोर दंड विधान बनाकर भी उसे रोक पाना कठिन है |उसका समाधान तो होगा केवल मानव हृदय में परिवर्तन से और उसमें संवेदनशीलता जागृत करने से | मानव में यदि यह विवेक जागृत हो जाए कि प्राकृतिक संसाधनों के अनावश्यक सीमाहीन दुरुपयोग तथा पर्यावरण प्रदूषण द्वारा प्रदत्त कठोर सजा से वह स्वयं तथा उसका परिवार भी नहीं बच सकेगा,तो वह सावधान होकर परिवार,समाज

तथा राष्ट्र-हित को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण के संरक्षण में अपने स्तर से दत्तचित्त आवश्यक हो जाएगा और यह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह प्रभाव दूसरों पर भी अवश्य पड़ेगा |

आज से हजारों वर्ष पूर्व महावीर ने जिस समाज की कल्पना की थी उसमें व्यक्ति के पतन को रोकने के साथ-साथ भौतिक एवं जैविक संसाधनों के बचाने की बात कही थी जैन आगमों के प्रथम सूत्र 'आचारांग'6 इस बात का साक्षी है | इसमें मनुष्य की अपेक्षा पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु और वनस्पति की सुरक्षा का प्रथम प्रयास किया गया | यह इसीलिए नहीं कि वह मूल्य हीन थे,अपितु इनसे ही व्यक्ति का मूल्य था और उनके संरक्षण से ही पर्यावरण संतुलित बना रहेगा | दूर दृष्टि संपन्न जैन आचार्यों ने सहस्रअब्दियों पूर्व ही पर्यावरण-प्रदूषण की विकट समस्या का अनुभव किया था और उसके लिए मानव को भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत अहिंसा,अपरिग्रह अपनाने एवं संयम पूर्ण जीवन व्यतीत करने का निर्देश दिया |यद्यपि जैन आगम में पर्यावरण शब्द नहीं मिलता परंतु इसकी सूक्ष्म विवेचना पर्यावरण के तत्वों के अन्य नाम से की गई | पर्यावरण और अहिंसा का अटूट संबंध है अतः जीव रक्षा ही पर्यावरण है |

जैन दर्शन की पृष्ठभूमि में अहिंसा, अपरिग्रह में पूरी तरह पर्यावरण संरक्षण के बीज विद्यमान है | तत्वार्थ सूत्र में अपरिग्रह का जो 'व्रत'7 दिया वह पर्यावरण विज्ञान का महत्वपूर्ण सूत्र है | जैन साधु-साध्वी हिंसा के पूर्ण त्यागी होते हैं | 'एगे आया'8 के सिद्धांत अनुसार आत्मा एक है | सभी जीव चेतना दृष्टि से समान है | जैन दर्शन का प्राणी मात्र की एकता और समता संदेश पर्यावरण में सभी जीवो के साथ एकता और आत्मतुल्यता के भाव को पुष्ट करता है | 'आचार्य उमा स्वाति ने पृथ्वी,अप,तेज, वायु एवं वनस्पति को एकेंद्रीय स्थावर जीव तत्व माना है |'9 पृथ्वीकाय में पत्थर,मिट्टी,विभिन्न खनिज पदार्थ आदि का समावेश होता है | अप्काय में पानी तेजस्काय में अग्नि, वायुकाय में हवा, वनस्पतिकाय में हरियाली,पेड़ पौधे आदि तथा त्रसकाय में पशु-पक्षी, मनुष्य आदि हलन चलन करने वाले जीवों का समावेश है | पृथ्वी अप तेज वायु वनस्पति के जीव एकेंद्रीय कहलाते हैं | वे सूक्ष्म होते हैं, उन्हें हम आंखों के द्वारा नहीं देख सकते | वास्तव में जीवन की यह सूक्ष्म दृष्टि जैन दर्शन की अपनी एक विशिष्ट स्वीकृति है

इसीलिए सूक्ष्मजीवों की हिंसा से बचने के लिए जैन धर्म ने जितना विचार किया है उतना अन्य किसी धर्म ने नहीं किया |

यह पांच प्राकृतिक घटक पर्यावरण को संतुलित रखने वाले ही है,जिनकी चर्चा आज वैज्ञानिक भी कर रहे हैं,उसे जैन की अहिंसा मान्यता को एक नया आयाम मिला है |जैन सिद्धांत 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'10 के अनुसार परोपकारी स्थावर जीवों का कभी भी घात-प्रतिघात नहीं करना चाहिए | वातावरण को प्रदूषित करने से ऑक्सीजन की मात्रा क्षीयमान होती जा रही है | इस प्रकार जब इनके वरदानों का अनावश्यक अंधाधुंध दुरुपयोग किया जाने लगता है तो वह अनावृष्टि दुष्काल, महामारी, भूकंप व सुनामी व कैटरीना जैसी समुद्री लहरें उत्पन्न कर पर्यावरण को प्रदूषित करने वालों को दंडित करने में नहीं हिचकते | इस भयावह परिस्थिति का एकमात्र समाधान अहिंसक जीवन-चर्या अनेकांत वाद,धार्मिक संस्कार व श्रावकाचार के पूर्ण पालन से ही संभव है | "बहुत सारे लोग पेड़ों को काटकर बीमार पड़ जाते हैं उन्हें पता नहीं चलता है कि यह बीमारी उन्हें क्यों आई है|"- तीर्थंकर वाटिका11 भगवान महावीर ने दो मुख्य निर्देश दिए हैं जंगलों की कटाई न हो व भूमि का उत्खनन न हो | विज्ञान की आधुनिक शाखा 'डीप इकोलॉजी' नैतिकता व मर्यादा की सीमा खींचते हुए ऐसा जीवन जीने का आग्रह करती है जिसे प्राकृतिक संतुलन बना रहे |

'जैन धर्म में तीर्थंकरों की माता के 16 सपनों में प्रकृति के तत्व सम्मिलित है |"12 सामाजिक पर्यावरण की दृष्टि से तो जैन धर्म के सिद्धांत अत्यंत विशिष्ट है | मद्य,मांस, मधु व रात्रि भोजन के त्याग में पूरी तरह पर्यावरण संरक्षण मिलता है अन्यथा व्यक्तियों को कई बीमारियां घेर लेती है , इसीलिए चातुर्मास में जीवों की रक्षा पर ध्यान दिया जाता है, पानी छानकर पीने की बात कही है |"13 असंयम पर अंकुश आवश्यक है| जैन दर्शन के मानव मन को, उसकी वृत्तियों को प्रशिक्षित और नियंत्रित करने की पर्यावरण की अवधारणा भारतीय संस्कृति का ही एक रूप है जिस पर गंभीरता पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है | आज जब सारा संसार संकट से जूझ रहा है इन सब विषमताओं से बचने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है | इसके लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय है- जैन धर्म अनुमोदित अहिंसक एवं सुसंयमित जीवन व्यतीत करना | जैन धर्म के

सिद्धांतों से पर्यावरण को न केवल सुरक्षित रखा जा सकता है बल्कि उसका संवर्धन भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. संस्कृत हिंदी कोष ,पृष्ठ .162
2. आवृणोत्याावियतेघ्नेनेती वा आवरणं,सर्वार्थसिद्धि :8/4
3. प्रज्ञापना सूत्र, 1/1/14 -15
4. डॉ.कामता प्रसाद जैन द्वारा सम्पादित तत्वार्थ भूमिका
5. आचारांग सूत्र, 1/5/43-45
6. प्राकृत और जैन धर्म समीक्षा,स.प्रो.प्रेम सुमन जैन, मुजफ्फरनगर, -2013
7. जैन साहित्य- प्रो.डॉ.राजाराम जैन, मुजफ्फरनगर, -2013
8. आगम युग का जैन दर्शन-पंडित दल्सुख मालवनिया, जयपुर 1990
9. आम्र मंजरी- श्री उमराव कँवर जी 'अर्चना' ब्यावर, 1966
10. जीवन की मुस्कान – डॉ.प्रियदर्शना जी ,डॉ.सुदर्शना श्री, उदयपुर-1998
11. बातें जीवन जीने की – श्री चन्द्र प्रभजी म.सा.,कोलकाता,2002
12. जैन धर्म की मौलिक उद्भावनाएँ,आचार्य श्री जीतमलजी म.सा.,मद्रास 1979